23

छन्दसां मात्रागणयतिभेदा

(छन्दों की मात्रा गण यति और भेद)

मन्त्र छन्दबद्ध होता है। केवल यजुर्वेद को छोड़कर तीनों संहिताएं छन्दमय हैं। अत: छन्दों के ज्ञान के बिना वेदमन्त्रों के साधु उच्चारण करने में समर्थ नहीं होते। अत: छ: वेदांगो में छन्द का अन्तर्भाव होता हैं वेदपुरूष के पाद से छन्द की कल्पना की गयी है। जैसा कहा गया – ''छन्द: पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते''। शौनक विरचित ऋक्प्रातिशाख्य के अन्तिम भाग में छन्दों का पर्याप्त विवेचन है। इस छन्दशास्त्र का पिगंलछन्दसूत्र नामक ग्रन्थ विद्यमान है। पिंगलाचार्य ने इस छन्दसूत्र ग्रन्थ की रचना की। इसमें वैदिक और लौकिक छन्दों का विवेचन हैं। छन्दशास्त्र अत्यन्त प्राचीन है। यास्काचार्य विरचित निरुक्तग्रन्थ में और ब्राह्माण ग्रन्थों में छन्द शब्द का अनेक प्रकार से निवर्चन प्रदर्शित है। ऐतरेयारण्यक में कहा गया– ''मानवान् पापकर्मभ्य: छादयन्ति छन्दांसि इति छन्द:''। तैत्तिरीयसंहिता में ''देवा छन्दोभिरात्मानं छादयित्वा उपायन् प्रजापतिरग्निं चिनुत'' कहा गया। व्याकरण के आचार्य महर्षि पाणिनी के मत में तो 'छन्द् धातु से छन्द शब्द की व्युत्पति होती है। इस पाठ में कुछ छन्द संबंधी चर्चा प्रस्तुत है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे :

- छन्द के सामान्य परिचय व लक्षण को जान पाने में;
- छन्दों के वैशिष्ट्य एवं भेदों को समक्ष पाने में;
- पद्य के लक्षण को जान पाने में;
- वृत्त के लक्षण व भेदों को जान पाने में;

- छन्द लक्षण में प्रयुक्त गण, यति, दण्डक, लघु, गुरू आदि को समझ पाने में;
- छन्द से श्लोक रचना व श्लोक को देखकर छन्द का ज्ञान कर सकेंगे।

23.1 छन्द का लक्षण

'छादयति आच्छादयति वा इति छन्दः। वैयाकरण पाणिनी के मत में तो अभिप्रायर्थबोधक से अथवा आनन्दपर्यायभुक्तार्थ से छदि धतु से छन्द शब्द की उत्पत्ति हुई। जो पाप से आच्छादित करता है वह छन्द है। अर्थात् जो जिस पाप से यजमान और पुरोहित को आच्छादन करता है वह छन्द है। तैत्तिरीय संहिता में छन्द की उत्पत्ति के विषय में एक आख्यायिका उपलब्ध है। प्रजापति ने अग्नि को चुना। उस अग्नि ने भयंकर रूप धरण कर लिया उस अग्नि को धारणकर के प्रजापति देवगण के साथ चले गये। उस भयंकर रूप को देखकर देवों ने भी अग्नि के साथ जाने का साहस नहीं किया। तब देव ने छन्द से शरीर को आच्छदित करके अग्नि के साथ जाकर अक्षतरूप से पुनः आ गये। छन्द से शरीर को आच्छादित किया। अतः छन्द नाम से सुप्रसिद्ध है। ऐतरेयारण्यक में कहते है कि- ''मानवान् पापकर्मेभ्यः छन्दयन्ति छन्दांसि इति छन्दः''। तैत्तिरीयसंहिता में कहा गया-''देवा छन्दोभिरात्मानं छादयित्वा उपायन् प्रजापितिरग्निं चिनुतः''।

23.2 छन्द के प्रकार

छन्द वस्तुत लौकिक और वैदिक भेद से दो प्रकार का होता है

लौकिक छन्द पिंगलादि आचार्यों के मत में मात्र वर्ण भेद से दो प्रकार का होता है। जैसे वृत्तरत्नाकर में कहा गया-

पिंगलादिभिराचार्यैर्यदुक्तं लोकिकं द्विधा।
मात्रवर्णविभेदेन च्छन्दस्तदिह कथ्यते॥

अर्थात् पिंगलाचार्य ने छन्द के दो भेद कहे हैं लौकिक और वैदिक। उनमें भी लौकिक छन्द मात्रा एवं वर्ण भेद से पुन दो प्रकार के है।

23.3 पद्य का लक्षण

छन्दोमंजरी ग्रन्थ में पद्य का लक्षण कहा गया है- 'पद्यं चतुष्पदी'। चतुर्ष्णाम् पदानां समाहारः - चतुष्पदी यहा समाहार अर्थ में ई प्रत्यय है। अर्थात् चार पादात्मक पद्य होता है। गंगादास का आशय है कि छन्दशास्त्र के पारिभाषिक पादचतुष्ट्य समाहार रूप में वाड्मय ही पद्य होता है। और यह पद्य दो प्रकार का होता है 1. वृत्त पद्य 2. जाति पद्य। उनमें अक्षर गण घटित पद्य को वृत्त और मात्रिक गण घटित पद्य को जाति कहते हैं। वृत्तपद्य के उदाहरण है वसन्ततिलका आदि और जाति छन्द के उदाहरण हैं आर्यादि ऐसा छन्दोमञ्जरी में कहा गया है-

पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विध।
वृत्तमक्षर संख्यातं जातिर्मात्रा कृता भवेत॥

अर्थात् छन्दोबद्ध पद्य होता है यह सामान्य लक्षण है। छन्दोमञ्जरी में कहा गया है कि चार पादों वाला पद्य होता है। वह पद्य दो प्रकार का होता है। वृत्तपद्य और जातिपद्य। अक्षरों के निर्दिष्ट संख्या से नियमित और निबद्ध पद्य वृत्तपद्य होता हैं अक्षरसंख्यात अक्षरों से एक दो आदि वर्णों से संख्यात य परिगणित जो होता है वह वृत्त होता है उसका उदाहरण है- धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे समवेता युयुत्सव:।

मामका: पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय॥

इस श्लोक में अक्षर संख्या से पद्य निर्धरित होता हैं संख्या के आश्रित होकर ही पद्य की गणना होती है। जैसे इस श्लोक के प्रत्येक पाद में आठ वर्ण हैं उनमें से नियतमात्र वाले को जाति कहते है। जैसा कि छन्दोंमंजरी में कहा गया है- ''जातिर्मात्रिकृता भवेत्'' अक्षर अवयव रूप मात्र है उनके द्वारा निबद्ध किया जाय वह जाति है। जैसे- **तरूणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि।**

अल्पव्ययेन सुन्दरि ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति॥

यह जातिरूप पद्य का एक उदाहरण है। मात्रा को आश्रित करके ही पद्य की गणना होती है। चरण या पाद के मात्र समानता से पद्य की गणना होती है। वामकरतल से एक बार जानुमण्डल की परिक्रमण के लिए जो समय अपोक्षित है वह मात्रा पद से वाच्य होता है। मात्रा तीन प्रकार की होती है। ह्रस्व मात्रा, दीर्घमात्रा और प्लुतमात्रा। जिसके उच्चारण में एक मात्रा का समय अपेक्षित होता है वह ह्रस्व होती हैं जिसके उच्चारण में दो मात्राओं का समय अपेक्षित होता है। वह दीर्घ होती है। और जिसके उच्चारण में तीन मात्राओं का समय अपेक्षित होता है वह प्लुत होती है। व्यंजन वर्ण के उच्चारण में अर्धमात्रा का समय अपेक्षित है। जैसा कहा गया है-

एक मात्रे भवेद् ह्रस्व: द्विमात्रे दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यंजन चार्धमात्रकम्॥

गुरू लघु विन्यास की नियम व्यवस्था का नाम वृत्त है। गुरू लघु विन्यास नियम ही गणसाध्य होते हैं जैसे - म-य-र-स-त-ज-भ-न- ये आठ गण होते है। ये गण ही अक्षर गुरू लघु विन्यास भेद से भिन्न होते है।

पाठगत प्रश्न 23.1

1. छन्द शब्द की व्युत्पत्ति क्या है?
2. छन्द वेदपुरूष के किस अंग से पैदा हुआ है?
3. छन्द के कितने भेद हैं और कौन से हैं?
4. लौकिक छन्द कितने प्रकार के हैं और कौन से हैं?

टिप्पणी

5. पद्य का लक्षण क्या है ?

6. पद्य कितने प्रकार के हैं और कौन से है?

23.4 वृत्त के प्रकार

वृत्त तीन प्रकार के होते है- 1 समवृत्त 2 अर्धसमवृत्त 3 विषमवृत्त। जैसा कि छन्दोमंजरी में कहा गया है- सममर्धसमं वृत्तं विषमं चेति तत त्रिधा। इसी प्रकार वृत्तरत्नाकर में भी वृत्त के भेद कहे गये है- सममर्धसमं वृत्तं विषमं च तथापरम्।।

23.4.1 समवृत्त

जिस वृत्त के चारों पादों में गुरू लघु के क्रम से समान संख्या में अक्षर होते हैं वह समवृत्त होता है। छन्दोमंजरी में कहा है- ''समं समचतुष्टयम्'' अर्थात् चारों पाद या चरणों में समान संख्या के अक्षर होते है- वृत्तरत्नाकर में कहा है-

अंध्रयो सस्य चत्वारस्तुल्यलक्षणलक्षिता।
तच्छन्दः शास्त्रतत्त्वज्ञाः समं वृत्त प्रचक्षते।।

अंध्रय का अर्थ पाद होता है। जिस वृत्त के चारों पाद समान लक्षण से युक्त होते हैं अर्थात् जिस वृत्त में चारों पाद समान अक्षर संख्या विशिष्ट होते हैं वह समवृत्त कहा जाता है। जैसे इन्द्रवज्रा, शालिनी, मालिनी, रथोद्धता वंशस्थ आदि। जैसे

इदं किल व्याजमनोहरं वपुः तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधरया, शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।।''

इस श्लोक के चारों पादों में 12-12 अक्षर है। अतएव यह समवृत्त का उदाहरण है।

23.4.2 अर्धसमवृत्त

जिस वृत्त के प्रथम पाद और तृतीय पाद समान हो एवं द्वितीय और चतुर्थपाद समान होते है वह अर्धसमवृत्त होता है- जैसा कि केदारभट्ट ने वृतरत्नाकर में कहा है-

प्रथमांध्रिसमो यस्य तृतीयश्चरणों भवेत्।
द्वितीयस्तुर्यवद्वृत्तं तदर्धसममुच्यते।।

छन्दोमंजरी में कहा है- ''आदिस्तृतीयवद् यस्य पादस्तुर्यो द्वितीयवत्'' अर्थात् जिस वृत्त का प्रथम पाद तृतीयपादवत् और तुर्य (चतुर्थ) पाद द्वितीयवत् होता है वह अर्धसमवृत्त होता है। आधा समान होने के कारण अर्धसम कहा गया है। जैसे- पुष्पिताग्रा, सुन्दरी, मालाभरिणी आदि। अर्धसमवृत्त का उदाहरण–

क्व वयं क्व परोक्षमन्मथः, मृगशावैः सममेधितो जनः।
परिहास विजल्पितं सखे, परमार्थेन न गृह्यतां वचः॥

इसके प्रथम पाद में 10 अक्षर है वैसे ही तृतीयपाद में भी 10 अक्षर है। अतः प्रथम व तृतीयपाद तुल्य हैं इसी प्रकार द्वितीय एवं चतुर्थ पाद में 11 अक्षर हैं अतः यह अर्धसम का उदाहरण है।

23.4.3 विषमवृत्त

जिस वृत्त के प्रत्येक पाद में अक्षरों की संख्या भिन्न-भिन्न होती है वह विषम वृत्त होता है। जैसे कि छन्दोमंजरी में कहा गया है-

यस्य पाद चतुष्केखपि लक्ष्म भिन्नं परस्परम्।
तदाहुर्विषमं वृत्त छन्दः शास्त्र विशारदाः॥

जिस छन्द के चारों ही पादों में परस्पर भिन्न संख्या विशिष्ट अक्षर होते है वह विषम वृत्त है यह छन्दः शास्त्रचार्य कहते है। जैसे उद्गता सौरभकः आदि। विषमवृत्त का एक उदाहरण-

मृगलोचना शशिमुखी च, रूचिरदशना नितम्बिनी।
हंसललित गमना ललना, परिणीयते यदि भवेत् कुलोद्गता॥

इसके प्रथम एवं द्वितीय पाद में दस-दस अक्षर हैं तृतीय पाद में ग्यारह अक्षर है और चतुर्थपाद में तेरह अक्षर हैं इस प्रकार प्रत्येक पाद में अक्षरों की संख्या भिन्न होने से यह विषमवृत का उदाहरण है।

23.5 गण

गण् धतु से कर्ता एवं कर्म में अच् प्रत्यय से गण शब्द निष्पन्न होता है। गण का अर्थ समूह होता है। किन्तु यहां पद्य पाद घटक अक्षर त्रय समुदाय को गण कहते है छन्दः शास्त्र में प्राय आठ गण होते है जैसाकि छन्दोमंजरी में कहा गया है-

म्यरस्त जभ्नगैर्लान्तैरेभिर्दशभिरक्षरैः।
समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना॥

मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, जगण, भगण, और नगण ये आठ गण होते है। तथा ग वर्ण से गुरु एवं ल वर्ण से लघु स्वीकार किया गया है। ये सभी छन्दशास्त्र में परिव्याप्त है। जैसे भगवान विष्णु समस्त जगत को परिव्याप्त होते हैं, वैसे ये है। संस्कृत जगत में छन्द के ज्ञानलाभ के लिए गण का प्रयोजन होता है। पाद के गुरु लघु क्रम से तीन अक्षरों का समूह गण होता है। छन्दोमंजरी में गण का लक्षण क्रमशः कहा गया है।

टिप्पणी

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो, भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमधयगतो रलमधयः, सोखन्तगुरुः कथितोखन्तलघुस्तः॥
गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेककः।''

वृत्तरत्नाकर में केदारभट्ट ने गण लक्षणों को कहा है-

सर्वगुर्मो मुखान्तर्लौ यरावन्तगलौ सतौ।
ग्मधयाद्यौ षभौ त्रिलो नोखष्टौ भवन्त्यत्र गणास्त्रिकाः॥

अर्थात्- मगणः त्रिगुरु। जिस गण में सभी तीनों अक्षर गुरु संज्ञक होते हैं। वह मगण होता है। जैसे 'वागर्था' इस गण में तीनों अक्षर गुरु है। संयोग से पूर्व अक्षर भी गुरु संज्ञक होता है। अतएव र एवं थ के संयोग से पूर्व वर्ण गकार गुरु संज्ञक होता है। उसके बाद कहते हैं **''त्रिलघुश्च नकारः''** जिस गण में तीनों अक्षर लघु होते है वह नगण हाता है जैसे 'रचय' में तीनों लघु होने का उदाहरण है। **भगण का लक्षण है- भादिगुरुः** अर्थात् जिस गण में आदि अक्षर गुरु और शेष दो लघु होते है। वह भगण होता है। जैसे 'श्रीमति' यहां केवल प्रथम अक्षर गुरु है शेष दोनों अक्षर लघु होने से भगण का उदाहरण है। **यगण का लक्षण - ''आदिलघुः यः''** जिस गण में प्रथम अक्षर लघु तथा शेष दो गुरु होते है वह यगण होता है। जैसे 'मनीषा' इसमें प्रथम अक्षर लघु है शेष दोनों गुरु होने से यह यगण का उदाहरण है। **जगण का लक्षण ''गुरुमध्यगतः'' अर्थात् जगण** में केवल मध्यम (बीच का) अक्षर गुरु होता है। शेष प्रथम व तृतीय लघु होते हैं। जैसे मधूनि इसमे मध्यम 'धू' अक्षर गुरु है तथा प्रथम 'म' एवं तृतीया नि दोनों लघु होने से जगण का उदाहरण है। **रगण का लक्षण है - ''र लमधयः''** अर्थात् रगण में मध्य अक्षर लघु होता है। और शेष प्रथम व तृतीया गुरु होते हैं। जैसे कौमुदी यहाँ मध्यम अक्षर 'मु' लघु है तथा शेष प्रथम 'कौ' एवं अन्तिम 'दी' दोनो गुरु होने से रगण है। **सगण का लक्षण है - सोखन्त गुरुः** अर्थात् सगण में केवल अन्तिम अक्षर गुरु होता है शेष दोनों (प्रथम व मध्य) लघु होते हैं। जैसे- 'कमला' यहा अन्तिम 'ला' गुरु संज्ञक है तथा शेष प्रथम 'क' अक्षर मध्य 'म' दोनों लघु होने से सगण का उदाहरण है। **तगण का लक्षण है' अन्तलघुस्तः' अर्थात्** जिसमें अन्त लघु होता है जैसे - 'सर्वाणि' यहा अन्तिम 'णि' लघु सज्ञंक है तथा शेष 'स' 'र्वा' दोनों गुरु सज्ञंक होने से तगण है। क्योंकि संयोग से पूर्व भी गुरु होता है। 'र्वा' इस संयोग से पूर्व 'स' गुरु हुआ। इस प्रकार अक्षरत्रय के आधार से आठ गंण है। इसके बाद **गकार के विषय में कहा है ''गुरुरेको गकारस्तु''** यहाँ केवल एक अक्षर 'ग' का अर्थ गुरु होता है। जैसे 'सा' यहां सा गुरु वर्ण है। अन्त में **लकार के विषय में कहते हैं- 'लकारो लघुरेककः'** एक अक्षर वाला लघु वर्ण लकार होकर है। जैसे 'नु' यहां 'नु' लघुवर्ण है। जिसको 'ल' के रूप में लिखते है। यहाँ अक्षर का अर्थ - स्वर या स्वर युक्त व्यंजन से है।

पाठगत प्रश्न 23.2

7. वृत के कितने प्रकार है नाम लिखिए।
8. समवृत का लक्षण लिखिए।

9. अर्धसमवृत्त का लक्षण लिखिए।

10. विषमवृत्त का लक्षण लिखिए।

11. गण कितने है नाम लिखिए।

12. मगण का लक्षण लिखिए।

13. यगण का लक्षण लिखिए।

14. रगण का लक्षण लिखिए।

15. सगण का लक्षण लिखिए।

16. तगण का लक्षण लिखिए।

23.6 अक्षरों के चिह्न

प्राच्य पण्डितों ने गुरु वर्णो के लिए (ऽ) चिन्ह का प्रयोग किया है, लघुवर्णों के लिए (।) इस चिन्ह का प्रयोग किया है। किन्तु पाश्चात्य पण्डितों ने अन्य चिन्हों का व्यवहार किया है। पाश्चात्यों ने गुरुवर्णो के लिए (–) चिन्ह तथा लघुवर्णो के लिए (..ए..) चिन्ह का प्रयोग किया छात्रों को सरलता से समझने के लिए तालिका दी गयी है।

गण का नाम	लक्षण	चिन्ह	उदाहरण
मगण	त्रिगुरु:	ऽऽऽ	श्रीदुर्गा
नगण	त्रिलघु:	।।।	रचय
भगण	आदिगुरु:	ऽ।।	श्रीमति
यगण	आदिलघु:	।ऽऽ	मनीषा
जगण	गुरुमध्यगत:	।ऽ।	मधूनि
रगण	ल मधय:	ऽ।ऽ	कौमुदी
सगण	अन्तगुरु:	।।ऽ	कमला
तगण	अन्तलघु:	ऽऽ।	सर्वाणि

23.7 मात्रिकछन्द के उपयोगी गण

मात्रिक छन्द के लिए उपयोगी गण कारिका के माध्यम से कहते है–

ज्ञेया: सर्वान्त मध्यादिगुरवोऽत्र चतुष्कला:।
गणाश्चतुर्लघूपेता: पञ्चार्यादिषु संस्थिता:॥

टिप्पणी

आर्या आदि मात्रिक छन्द में चार मात्राओं वाले पांच गण होते है। अर्थात् प्रत्येक गण में प्रायः चार मात्रा होती हैं। वे हैं - सर्वगुरु, अन्तगुरु, मध्यगुरु, आदिगुरु, और सर्वलघु। सर्वगुरु इस उक्ति में सभी वर्ण गुरु संज्ञक होते है जैसे दुर्गा यहां दुर्गा में दोनों वर्ण गुरु संज्ञक है। 'अन्तगुरु' इस उक्ति में केवल अन्तिम अक्षर गुरु संज्ञक होता है शेष लघु सज्ञंक। जैसे रमणी यहाँ णी गुरु सज्ञंक अन्तिम वर्ण है तथा शेष र, म लघु सज्ञंक है। ''मध्यगुरुः'' इस उक्ति में केवल मध्य वर्ण गुरु संज्ञक होता है। जैसे शिवाय' यहाँ वा' गुरु सज्ञंक वर्ण है तथा शेष शि, य लघु सज्ञंक है। ''आदिगुरुः'' इस उक्ति में केवल आदि अक्षर गुरु होता है। जैसे 'शंकर' यहाँ केवल शं अक्षर गुरु है शेष 'क' एव 'र' लघु है। यहां शं अनुस्वार होने से गुरु वर्ण है। 'सर्वलघु' इस उक्ति में सभी अक्षर लघु होते है। जैसे रचयति' यहां सभी अक्षर लघु संज्ञक है। यहां ध्यान देने योग्य बात है कि मात्रिक छन्द में चार मात्राओं का गण होता है। इसलिए प्रकृत गण में चार मात्राएं अनिवार्य है। यहां लघु के लिए एक मात्रा और गुरु के लिए दो मात्राओं की गणना होती है।

वाम करतल से एकबार में जानु मण्डल की परिक्रमण के लिए जो समय अपेक्षित होता है वह मात्र पद वाच्य होता है। जैसा कि कहा गया है-

वामजानुनि तद्धस्तभ्रमणं यावता भेवत्।
कालेन मात्र सा ज्ञेया मुनिभिर्वेदपारगैः॥

मात्रा तीन प्रकार की होती है ह्स्व, दीर्घ और प्लुत।

छात्रों की सरलता के लिए मात्रिक छन्द की तालिका गण विचार हेतु प्रस्तुत है।

गण	चिन्ह	उदाहरण	मात्र
सर्वगुरुः	ऽऽ	दुर्गा	चार
अन्तगुरुः	।।ऽ	कमला	चार
मध्यगुरु	।ऽ।	शिवाय	चार
आदिगुरुः	ऽ।।	शंकर	चार
सर्वलघुः	।।।।	रचयति	चार

23.7.1 गुरुस्वर का वर्णन

छन्द के प्राणभूत गणों का निरूपण दिया गया हैं अब मन में शंका उत्पन्न होती है कि गुरू वर्ण कौन होता है? इसके समाधन के लिए छन्दोमंजरी में कारिका कही गयी है-

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरूर्भवेत्॥
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

केदार भट्ट ने वृत्तरत्नाकर मे कहा है- ''सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः।
वा पादान्ते त्वसौ ग्वकौ ज्ञेयोखन्यो मात्रिको लृजुः।।''

अनुसार युक्त स्वर गुरू होता है। जैसे ग्रामं गच्छति यहाँ में पर अनुस्वार है अत: में म में अं अनुस्वार युक्त स्वर गुरू हुआ। अनुस्वार से रहित व्यंजन लघु गुरू हो सकता है। जैसे राम: यहा मकारोतरवर्ती अकार है वह गुरू होगा क्योंकि उसके अन्त में विसर्ग है। संयुक्त वर्ण जिससे परे है वह स्वर भी गुरू होता है अच् से अव्यवहित हल की संयोग संज्ञा होती है। इस प्रकार से संयोग वाले शब्द युक्तवर्ण होते हैं। जैसे रक्त में 'क्त' युक्तवर्ण है अत: इससे पूर्व 'अ' की गुरू संज्ञा होती है। वृतों मे लघुवर्ण विकल्प से गुरू होता है और जाति में लघु एवं गुरू होता है। वृतों में लघुवर्ण विकल्प से गुरू होते है। जैसे 'उपेन्द्रवज्रादपि दारूणोखसि' यह ग्यारह अक्षर वाले उपेन्द्रवज्रा छन्द का चरण है इसके अन्त में उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ लक्षण से गुरू अपेक्षित है। अत: विकल्प से सि को गुरू किया जाता है। छन्दशास्त्र में कहीं पर लघुत्व अपेक्षा में गुरू स्वर भी लघुता को प्राप्त होता है। जैसे-

तरूणं सर्षपशाकं नवोदनं पिच्छिलानि च दधीनि।
अल्पव्ययेन सुन्दरि ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति॥

यह आर्या नामक जाति है। इसके प्रथम पाद में 12 मात्रा, द्वितीपपाद में 18 मात्रा तृतीय पाद में पुन: 12 मात्रा तथा चतुर्थपाद में 15 मात्राएं होती है। इस श्लोक के द्वितीय और चतुर्थ पाद के अन्तिमवर्ण लघु को गुरूत्व की अन्त्यन्त आवश्यकता है। इसी प्रकार तृतीय पाद में सुन्दरी के इकार में संयुक्त वर्ण से पूर्व होने के कारण गुरूत्व की संभावना है। जिसे तृतीय पाद में 13 मात्रा हो जाती है इससे छन्द भंग हो जायेगा इस लिए विकल्प से लघुत्व प्राप्त होता है। अतएव इस कारिका में प्रकट किया गया है-

पादादाविह वर्णस्य संयोग: क्रमसंज्ञक:।
पुन:स्थितेन तेन स्याल्लघुतापि क्वचिद् गुरो:॥

इस नियम से अनुसार इसके संयोग पूर्व होने से गुरू भी लघुता को प्राप्त होता है।

इस प्रकार एकमात्र के ह्रस्व करने से तृतीय पाद में 12 मात्रा ही जानी चाहिए अत: छन्दभंग नहीं होगा।

प्र हे यह एक विकल्प विधायक सूत्र है इससे प्र और ह्रे इन दोनों शब्दों से पूर्ववर्ण को विकल्प से ह्रस्वता का विधान है।

जैसे- सा मंगल स्नानाविशुद्धगात्री गृहीत प्रत्यंग मनोपवस्त्र।
निर्वृत्तपर्ज्यन्यजलपाभिषेका फ्रुल्लकाशा वसुधेव रेजे।।
यहां प्रवर्ण के संयोगघटित होने से लघुता प्रतिपादित की गई है।

ह्र शब्द के परे होने पर भी गुरू वर्ण को लघुता की संभावना होती है जैसे

प्राप्य नाभिह्रदमज्जनमाशु प्रस्थितं निवसनग्रहणाय।
औपनिविकमरून्ध किल स्त्री बल्लभस्य करमात्मकराभ्याम्॥'

यहां ह्र वर्ण के संयोग घटित होने से उससे पूर्ववर्ती वर्ण 'भि' की गुरूता होनी चाहिए परन्तु इस शास्त्र या नियम से विकल्प से लघुता प्रतिपादित की गई है, अत: इसमें भि की लघुसंज्ञा होती है।

टिप्पणी

23.7.2 यति

यम् धातु से भाव में क्तिन् प्रत्यय से यति शब्द निष्पन होता है। यति का अर्थ विराम होता है। छन्दशास्त्र में यति शब्द है, जिह्वा जहाँ रूकती है या विश्राम करती है वहाँ पर यति होती है।जैसा कि गंगादास ने कहा है- यतिर्जिह्वेष्ट विश्रामस्थानं कवभिरूच्यते।

सा विच्छेदविरामाद्यैःपदैर्वाच्या निजेच्छय॥

अर्थात पद्य के उच्चारण के समय में जिह्वा स्वतः ही जहाँ विश्राम प्राप्त करने की इच्छा करती है वहाँ पर यति होती है। विच्छेद विराम आदि पदों से भी यति का बोध होता है। यह यति पाद के मध्य या अन्त भेद से दो प्रकार की होती है पद्य के चरण को पाद कहते हैं। चतुष्पादात्मक पद्य के प्रतिपाद के अवसान(अन्त) में स्वभावतः ही यति होती है उसे पादान्त कहा जाता है। जैसे–

न तज्जलं यन्न सुचारूपंकजम्,। न पंकजं तद यदलीनषट्पदम्। इस वंशस्थविल छन्द के पद्य के सुचारूपंकजम् इस प्रथम पाद के अवसान में तथा षट्पदम् इस द्वितीय पाद के अवसान में पादान्त यति है। जहाँ पर निर्दिष्ट अक्षरों के बाद यति होती है उसे पादमधयगा यति कहते हैं। जैसे सरसिजमनुविद्ध पाद के अवसान मे पादान्त यति है, उसी प्रकार प्रथम अक्षर से आठवें अक्षर के बाद अनुविद्धम् यहाँ पादमधयगा यति है। यहां उल्लेख है कि जिस अक्षर में यति निर्दिष्ट है उस अक्षर पद के अन्तिम में होनी चाहिए। यदि पदमध्य में यति होती है तो वह यति कानों के लिए कर्कश होने के कारण रमणीयता को छोड़ देती है। स्वर सन्धि के पूर्वस्थ पदमध्यस्थ यति अरम्य नहीं होती है। जैसे कि कृष्णः ''पुष्णात्वतुलमहिमा मां करूणया'' यहां पुष्णेत्यत्र यति पदमध्यगा है किन्तु त्वतुले ति स्वरसन्धि से वह पदमध्यगा यति रमणीय ही होती है। केदाभट्ट ने वृत्तरत्नाकर में यति के विषय में एक कारिका कही है- यतिर्विच्छेद संज्ञिका अर्थात विच्छेद की यति संज्ञा होती है।

पाठगत प्रश्न 23.3

17. गुरूवर्ण कौन होता है?
18. यति किसने प्रकार की होती है?
19. यति के कौन से प्रभेद हैं?
20. यति का लक्षण क्या है?

23.8 दण्डक

वृत्तरत्नाकर में दण्डक का लक्षण कहां है- यदिह ''नयुगलं ततः सप्तरेफास्तदा चण्डवृष्टिप्रपातो मवेद् दण्डकः'' यहां दो नगणों के बाद सात रगण विद्यमान होते हैं। वह चण्डवृष्टिप्रपात नामक दण्डक होता है।

'तदूर्ध्व चण्डवृषयादिदण्डका परिकीर्तिता:' इस श्लोक से 26 से अधिक अक्षरपाद को छन्द की संज्ञा कही है। अर्थात 26 से अधिक 27 आदि अक्षर वाले पाद का छन्द दण्डक होता है। दण्डक शब्द का अर्थ है दण्ड प्रदान करने वाला। इस छन्द में भी दीर्घ पाद होते है। इस प्रकार के उच्चारण में कष्ट होता है वह कष्ट ही दण्ड होता है। दण्डक के चण्डवृष्टि आदि विशेष भेद होते है।

23.9 गाथा लक्षण

केदारभट्ट ने वृत्तरत्नाकर में गाथा का लक्षण प्रतिपादित किया है-

विषमाक्षरपादं वा पादैरसमं दशधर्मवत्।
यच्छन्दो नोक्तमत्र गाथेति ततृ सूरिभि: प्रोक्तम्॥
शेष गाथा स्त्रिभि: षड्भिश्चरणैश्चोपलक्षिता:।

इस श्लोक विशेष लक्षण से अलक्षित प्रयुज्यमान छन्दों की सामान्य संज्ञा गाथा होती है। जो चण्डवृष्टयादिविशेष से भिन्न होते हैं। तीन या छ: पादो से संलक्षित गाथा होते हैं। जिस छन्द में चार पाद से भिन्न संख्या में पाद होते हैं। तथा गुरूलघुक्रम भी भिन्न होता है एवं प्रत्येक चरण में अक्षर संख्या भी भिन्न होता है उस छन्द को गाथा कहा जाता है। गाथा का उदाहरण-

इस श्लोक मे तीन पाद है अत: यह छन्द गाथा नाम से जाना जाये।

23.10 छन्दों की सामान्य संज्ञा

यहां अक्षरों के ह्रास वृद्धि के अनुसार समवृत्त छन्दों के नाम निर्देश किये जाते हैं। एक अक्षर से आरम्भ करके एक एक अक्षर से बढते हुए पादों से भिन्न भिन्न छन्द हो जाते हैं। एक पाद में एक अक्षर होता है तो एक छन्द होता है। उसके बाद एक एक अक्षर जोड़कर अन्य छन्दों का निर्माण किया जाता है जैसा कि केदारभट्ट ने कहा है -

आरम्भै काक्षरात् पादादेकैकाक्षरवर्धितै:।
पृथक् छन्दो भवेत् पादैर्यावत् षड्विंशतिं गताम्॥

एकाक्षर से पाद का आरम्भ करके एक एक अक्षर बढ़ाते हुए पाद से भिन्न भिन्न छन्द बनेंगे। यह वृद्धि कितनी होती है। यह जिज्ञासा पैदा होती है उसका समाधान दिया है कि 26 संख्यात्मक पाद पर्यन्त वृद्धि सम्भव होती है। अर्थात् समवर्ण वृत्त में एक अक्षर से एक करके चार पाद में एक छन्द होता है। एक के बढ़ने से दो वर्णों से चार पादों के निर्माण में भी पृथक् छन्द होता है। इस प्रकार 26 वर्णों तक पृथक् पृथक् छन्दों की सम्भावना है। इनकी पृथक् पृथक् संज्ञा होती है। जैसा केदारभट्ट ने कहा है-

उक्ताखत्युक्ता तथा मध्याप्रतिष्ठाखन्या सुपूर्विका।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पंक्तिरेव च।

त्रिष्टुप् च जगतीं चैव तथाखतिजगती मता।
शक्वरी साखतिपूर्वा स्यात् अष्ट्यत्यष्टी ततः स्मृते।
धृतिश्चातिधृतिश्चैव कृतिः प्रकृतिराकृतिः।
विकृतिः संकृतिश्चैव तथाखतिकृतिरुत्कृतिः॥

अर्थात् एकाक्षर के छन्द का नाम उक्ता, द्व्यक्षर के छन्द का नाम अत्युक्ता, त्रियक्षर के छन्द का नाम मध्या, चतुरक्षर के छन्द का नाम प्रतिष्ठा, पंचाक्षर के छन्द का नाम सुप्रतिष्ठा और षडाक्षर के छन्द का नाम गायत्री होता है। सात अक्षर के छन्द का नाम उष्णिक, आठ अक्षर के छन्द का नाम अनुष्टुप, नौ अक्षर के छन्द का वृहती, 10 अक्षर के छन्द का नाम पंक्ति, 11 अक्षर के छन्द का नाम त्रिष्टुप, 12 अक्षर के छन्द का नाम जगती, 13 अक्षर के छन्द का नाम अतिजगती, 14 अक्षर के छन्द का नाम शक्वरी, 15 अक्षर के छन्द का नाम अतिशक्वरी, 16 अक्षर के छन्द का नाम अष्टि, 17 अक्षर के छन्द का नाम अत्यष्टि, 18 अक्षर के छन्द का नाम धृति, 19 अक्षर के छन्द का नाम अतिधृति, 20 अक्षर के छन्द का नाम कृति, 21अक्षर के छन्द का नाम प्रकृति, 22 अक्षर के छन्द का नाम आकृति, 23 अक्षर के छन्द का नाम विकृतिः, 24 अक्षर के छन्द का नाम संस्कृति, 25 अक्षर के छन्द का नाम अतिकृति, 26 अक्षर के छन्द का नाम उत्कृति। इस प्रकार एक पाद में इतनी संख्या होनी चाहिए।

छात्रों को सरलता से समझने के लिए तालिका प्रस्तुत है।

छन्द का नाम	पाद गत अक्षर संख्या	श्लोक गत अक्षर संख्या
उक्ता	1	4
अत्युता	2	8
मध्या	3	12
प्रतिष्ठा	4	16
सुप्रतिष्ठा	5	20
गायत्री	6	24
उष्णिक्	7	28
अनुष्टुप	8	32
बृहती	9	36
पंक्ति	10	40
त्रिष्टुप्	11	44
जगती	12	48

अतिजगती	13	52
शक्वरी	14	56
अतिशक्वरी	15	60
अष्टि	16	64
अत्यष्टि	17	68
धृति	18	72
अतिधृति	19	76
कृति	20	80
प्रकृति	21	84
आकृति	22	88
विकृति	23	92
संस्कृति	24	96
अतिकृति	25	100
उत्कृति	26	104

पाठगत प्रश्न 23.4

21. दण्डक का लक्षण क्या है?

22. गाथा का लक्षण क्या है?

23. गायत्री में कितने अक्षर होते हैं?

24. अनुष्टुप् छन्द में कितने अक्षर होते हैं?

25. त्रिष्टुप् छन्द में कितने अक्षर होते हैं?

26. जगती छन्द में कितने अक्षर होते हैं?

पाठसार

छादयति आच्छादयति वा इति छन्दः। वैयाकरण पाणिनि के मत में अभिप्राय अर्थ बोधक या आनन्दपर्याय मुक्तार्थक छन्द धातु से शब्द की उत्पत्ति होती है। जो पाप का आच्छादन करता

टिप्पणी

है वह छन्द है। छन्द वस्तुत लौकिक और वैदिक भेद से दो प्रकार का होता है। लौकिक छन्द पिंगलादि आचार्यो के मत में मात्र और वर्ण के भेद से दो प्रकार का होता है। उनमें से अक्षरगण घटित पद्य वृत्त होता है। मात्रिकगणघटित पद्य जाति होता है। वृत्त पद्य का उदाहरण है वसन्ततिलका आदि, जाति छन्द का उदाहरण है आर्या आदि। वृत्त तीन प्रकार के होते है। 1. समवृत्त 2. अर्धसमवृत्त 3. विषमवृत्त। जिस वृत्त के चारों पादों में गुरुलघु के क्रम से समान संख्यात्मक अक्षर होते हैं वह समवृत्त होता है। जैसे शालिनी, मालिनी इत्यादि। जिस वृत्त के प्रथम व तृतीय और दूसरा व चौथा पाद समान होता है। वह अर्धसमवृत्त होता है। जैसे पुष्पिताग्रा सुन्दरी आदि। जिस वृत्त के चारों पादों में भिन्न संख्यात्मक वर्ण होते हैं। वह विषमवृत्त होता है। जैसे उद्गाध, सौरभक आदि। छन्दशास्त्र में आठ गण होते है। जैसे - मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, जगण, भगण, और नगण ये आठ गण होते है। मात्रिक छन्दों में पांच गण होते है। प्रत्येक गण में प्रायः चार मात्राएं होती है। वे है- सर्वगुरु, अन्तगुरु, मध्यगुरु, आदिगुरु, और सर्वलघु। सानुस्वार, दीर्घ, विसर्ग एवं संयोग से पूर्व वर्ण गुरु हो जाता है। विराम का नाम यति है। जिह्वा जहां विश्राम करती है। वहां यति होती है। यह दो प्रकार पादान्त और पादमध्यगा से होती है। 26 से अधिक अक्षर वाले पाद को दण्डक कहते हैं। यहां अक्षरों के ह्रास और वृद्धि (कम ज्यादा) के अनुसार समवृत छन्दों के नामों का निर्देश किया गया है। एक अक्षर से आरम्भ करके एक-एक अक्षर के बढ़ने से भिन्न-भिन्न छन्द होते हैं। एक पाद के एक अक्षर होता है। तो वह भी छन्द होता है। उसके बाद एक अक्षर को आरम्भ करके क्रमशः एक-एक अक्षर को जोडकर अन्य छन्दों का निर्माण किया जाता है। उनकी उक्ता आदि संज्ञा प्रदान की गई है।

आपने क्या सीखा

- छन्द, छन्द लक्षण एवं उसका सामान्य परिचय।
- पद्य का लक्षण जाना।
- वृत्त के लक्षण एवं भेदों को जाना।
- छन्द लक्षण में प्रयुक्त गण, यति, दण्डक, लघु, गुरु आदि को जाना।

पाठान्त प्रश्न

1. छन्द का लक्षण प्रतिपादित कीजिए।
2. छन्द के भेदों को प्रतिपादित कीजिए।
3. पद्य के लक्षण को प्रतिपादित करके भेद लिखिए।
4. वृत्त के भेदों का प्रतिपादित कीजिए।
5. समवृत्त के विषय में लघु प्रबन्ध लिखिए।

6. अर्ध समवृत्त के विषय में लघु प्रबन्ध लिखिए।
7. विषमवृत के विषय में लघु प्रबन्ध लिखिए।
8. गणों के विषय में निबन्ध लिखिए।
9. गण कितने हैं उनका विवरण दीजिए।
10. मात्रिक छन्दों का वर्णन कीजिए।
11. गुरुस्वरों का प्रतिपादन कीजिए।
12. यति का लक्षण स्पष्ट कीजिए।
13. गाथा के लक्षण को स्पष्ट कीजिए।
14. दण्डक के लक्षण को स्पष्ट कीजिए।
15. छन्दों की सामान्य संज्ञा को निरूपण कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1

1. छादयति आछादयति वा इति छन्दः।
2. पैरों से।
3. दो प्रकार के। लौकिक और वैदिक।
4. दो प्रकार के। मात्रिक और वर्णिक
5. पद्य चतुष्पदी
6. दो प्रकार के। वृत्तपद्य और जातिपद्य।

23.2

7. वृत्त तीन प्रकार के है। 1. समवृत्त 2. अर्धसमवृत्त 3. विषमवृत्त
8. अंध्रयो यस्य चत्वारस्तुल्य लक्षण लक्षिताः।
   तच्छन्दः शास्त्रतत्वज्ञाः समं वृत्तं प्रचक्षते।।
9. प्रथमांध्रिसमो यस्य तृतीयश्चरणों भवेत्।
   द्वितीय स्तुर्यवद्वृत्तं तदर्धसममुच्यते।।

10. यस्य पादचतुष्केखपि लक्ष्मं भिन्नं परस्परम्।
    तदाहुर्विषमं वृत्तं छन्दः शास्त्र विशारदाः।।
11. आठ गण- मगण,यगण,रगण,सगण,तगण,जगण,भगण,नगण।
12. त्रिगुरुः।
13. आदिलघुः।
14. लमध्यः।
15. अन्तगुरुः।
16. अन्तलघुः।

23.3

17. सानुस्वारः दीर्घश्च विसर्गीय संयोगपूर्वश्च वर्णः गुरुः भवेत्।
18. द्विविध।
19. पादान्ता और पादमधयगा।
20. यतिर्जिह्वेष्ट विश्राम स्थानं कविभिरुच्यते।
    सा विच्छेद विरामाद्यैः पदैर्वाच्या निजेच्छया।।

23.4

21. तदूधर्व चण्डवृष्ट्यादिदण्डकाः परिकीर्तिता।
22. शेषं गाथास्त्रिभिः षड्भिश्चरणैश्चोपल क्षिताः।
23. चतुर्विशति 24।
24. द्वात्रिंशत् 32।
25. 44
26. 48